

DPN 6554

आपदुद्धार वटुक स्तोत्र ĀPADUDDHĀRAKA VAṬUKA STOTRA

Title :

Run. No. 7229

Cat. No. 37

Micro. No.

Subject स्तोत्र Hymn

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 19.5 x 7.3

Folios 19

Lines (in a page) 6/8

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : mantra monogram

Material : palmleaf / paper / thya^ssaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

△ श्री गुरुवे नमः ॥ देव्युवाच ॥ भगवन् देव देवेश लोकानुग्रहकारकः ।
त्वत्प्रसादात् महादेव श्रुतामन्त्रस्त्वमेकशः ॥

P. T. O.

□ इति सिद्धि मामले श्री महात्रिपुर सुंदरी कवच ॥ ॥

भैरवाष्टक

प्रा. श्री भैरवाय नमः ॥ सकल मनोरथ सिद्धिं मंगलवृद्धिं निश्चलां कमलां
यक्षति यस्य स्मरसो तं वन्दे भैरवं नार्थं ॥ १ ॥

समाप्ति- इति श्री भैरवाष्टक स्तोत्रं समाप्तं ॥

इति रुद्रमामले विश्वसारे आपदुद्धार वटुक स्तोत्रं ॥

उर्यदवि वारभकं तथा निति । धनं च तथ दाना च युयात्ता ॥
 संगयश सागि यामा न्युमचन वच्छामय तव धनान् । लीनारुया
 त्यमद्य तद्विस्तृतं न संशयस्य मय का मयत कामी य ॥ १० ॥
 मन्त्रमर्मा । नर्क काम म वाद्याति साधको नार संशयश ॥ ज्युको
 ल्पय रं ग द्वा । नक्षत्रं यत्य क स्य वि ग । सकुली नाय ॥ ११ ॥
 दायनं दं रुवर्जित । दद्यात्सु गमिदये सर्वं काम रूपाय ॥

२७ आ. बहुल म्नाय मज्ञ त्रिपुर सुदरीक वव

15

10

5

0

CMTS.

5

10

15

20

25

वृद्धसिद्धिमयिपुत्र॥ अथ यनगुद्ध कवचं सर्वकामफलप्रदं
प्रीतयते वदवेलि कथयामि नृणां सुखार्थं ॥ ५ ॥ अथ नाजनाज
श्वनाला महाप्रियुनसंदनी श्राउली विद्या केवलं महादेवस
विश्वस्तवः यदि ह्युदा नाजनाजं श्वनाली महाप्रियुनसंदनी
देवतासर्वथ साधनं विनिमागः ॥ युर्वमिरे नदी वागुवाला मी
यागुदकिं न मालिनी वल्लिभया गुहासि नीरुद्र नेवतु ॥ ६ ॥

उर्दुयागु महादेवी महाप्रियुनसंदनी अथ स्तायागु देवताया
तासे न नवासिनी ॥ ७ ॥ अथ मयः यागु मानित्यं मस्तके सर्वकामदः
बुद्धनः सर्वगुणैः लिखतु न च सर्वदा ॥ ८ ॥ महाविद्या रुद्रा
मी यागु माय न भव नी जेव सुलाठ मायागु कीर्तनः यागु ननु था
॥ ९ ॥ नासाय कर्तुं आद्य दौर्दे दौर्दौ चिक्केन थम सोऽयागु
हृदयजलं सज्जं मनाहि देवके ॥ १० ॥ कलजां स्त्री गुच्छ देव

यानि च यनयननकं जहा ॥ १३ ॥ यानि मवायु यागु ॥ १४ ॥ गत्माद नम
 नाय त्या दधि का नीरु वरुग ॥ मद्रकु विनिर्गमि र्क कर्ष सुवृत्त
 वृजा विरुध ॥ पुनता विधि नाय ॥ १५ ॥ सोरुग्य रोज लालि ता
 निगुलानि रुक्ता ॥ दद्या ॥ यद रुरुति तत्यून र्च तका ले ॥ १६ ॥ ० ॥
 ॥ नमकु लसंहिता यां श्रीमहा त्रिपुन सदनी कवरी ॥ १७ ॥ श्री त्रिपुन र्च
 दनी पुसनी रुवा ॥ १८ ॥ पना दधौ नमः ॥ दधुवाच ॥ देव देव मरु

देव रुक्ता नायि विवर्द्धनी सा च न यम हा दे व्वा ॥ १९ ॥ कवरी कथय
 सुभा ॥ महा देवुवाच ॥ ११ ॥ देवि युव ज्ञामि कवरी देव दुल
 र्च ॥ अथ काण्ठ यन गुह्य ॥ साध कारी सु सिद्धि ॥ १२ ॥ कवरी स
 सवि ॥ देवि ॥ दधि नमः ॥ नय ॥ १३ ॥ दधुवाच ॥ १४ ॥ देवि ॥
 पुन र्च देनी ॥ धेमा धिकाम मा का ॥ १५ ॥ विनियोग मसु साधना ॥ १६ ॥
 वागु वध काम ना जगु ॥ किवी डी मरु ॥ देवी वागु वध ॥ १७ ॥

कामना सुखदुःखदि॥२॥^{उदय रुद्रासाय हा}किं वा जसदायातु नारुद्रक बुवाद
आ॥४॥^{कुं}कुं सो वदनेवा तुवा लामा सर्वसिद्धय॥५॥^{कुं कुं कुं}कुं कुं कुं
यातु रुद्रवीक लु दलनः सुंदरी नारिदं ॥६॥^{या}या कीर्तन कामकलासदा
॥७॥^{तु}तु नाग था न नाल मला विपु न सुंदरी ललाटे लु र गमयातु रु
गममां के लु दलन ॥८॥^{रु}रु जय यातु रुद्र दय हं रुद्र गमाला लि ग दे ल ग लि ग
यातु म नारु वा ॥९॥^{गु}गु क्रवा तु म रु द वी ना ज ना जं रु वी गि वा वेत न्य रु

विनी यातु वाद था ज गे दमिका ॥१०॥^{ना}ना नायनी सर्वगमि सर्वकार्यं
रुं क नी वक्रु ला यातु मां पुर्व दक्षि ल वे लु वी न थ ॥११॥^वव श्रि म यातु वा ना
हि रु रु न तु म रु ल्य नी श्राव यी यातु को मानी मल ल द्वा ल्य ने र्तन ॥
॥१२॥^{वा}वा य यी यातु सा म लु लु द्वा ला यातु ली ल के उ ल यातु मल मा या वृ
थि र्मा सर्वमं ग ला ॥१३॥^{श्रु}श्रु का ला यातु व ज द स र्व तु नु व र्ता ल्य नी लू दं रु क व
व द या रु द वाना म वि दू ल र् ॥१४॥^यय ल ग रु स म लु ल्य लु व रु य न मान स

नाथयायाधयस्य स्य नरयचक्रविहवत ॥१॥ नवमासीरयंगस्य
 यागकानारियं ॥२॥ नदालिडवहगिके तिष्ठमृष्टवहानया ॥३॥
 गच्छ किं वयं नंदविस्तयं सत्यं वदाम्यहं ॥४॥ दैववचमहावाणीविद्यांया
 जयप्रिय ॥५॥ सनाथादिरुलंगस्ययापूयाहमुद्यागनी ॥६॥ ॐ नमो
 ह्रियामलं ग्रीमहागि वृत्तं दनीकवरा ॥७॥

ॐ नमो ह्रियामलं ग्रीमहागि वृत्तं दनीकवरा ॥७॥
 देव्या धादनीमृगार्हकवचं संवत् ॥

ॐ नमो ह्रियामलं ग्रीमहागि वृत्तं दनीकवरा ॥७॥ सकलमनात्रयमिष्टिं मंगलवृद्धिनिष्ठलांकमलीयकनियस्य
 समनलानंदवृत्तं नार्थ ॥१॥ विरुगिलियदहनीविकं रुद्धकथं विलगनाकनिम
 गलरुलनाजसज्जटं नमस्तिजालकं ० मालवालवृद्ध ॥२॥ रुद्धरुद्धंगरुद्धरुद्धंगरुद्ध
 रुद्धवृद्ध ॥३॥ विलाकय ४ समुक्तिमोमतादवादि वीकस ४ यपीयतंदलाहलीययाय
 निर्मलीय ४ १ विखंवरावकं ठयवडा विनिवर्न रुद्ध ॥३॥ यतायनकसफलक ॥
 कर्वरुनं यनमन्त्रालमंगययनूयादमीदनी १ मखयसीगिदकयरु नंगरुंगसल
 नं रुद्ध ॥४॥ विगलरुनगुरुनयमोरुनलावनं निताक रुकिगक विरुगर्ववासमा
 यनं १ कनायकावमं रुमालतावकादिवाकनं रुद्धरुद्धंग ॥५॥ धनाधनवृद्धनं दिनीमूरवान

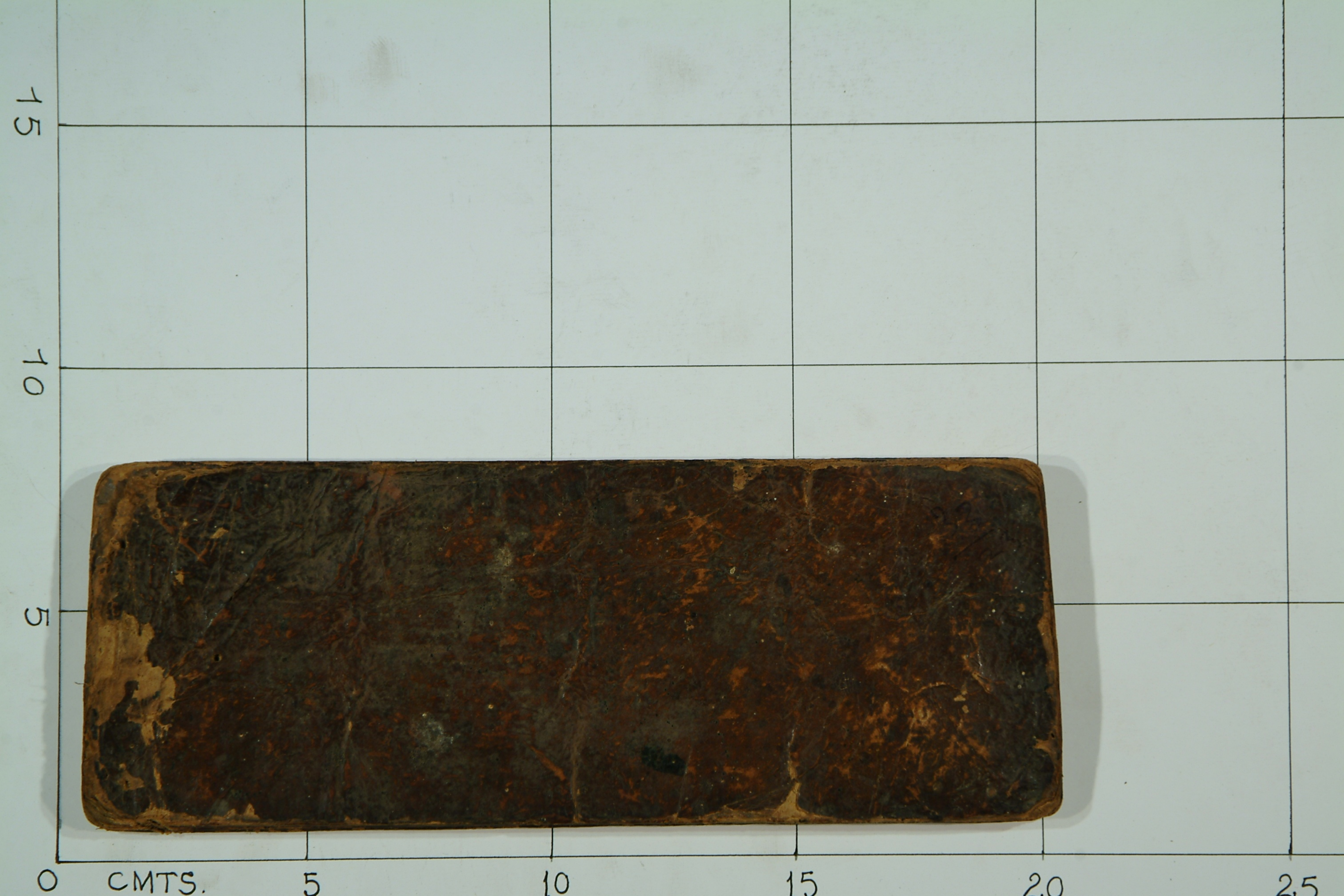
विन्दुखंजनं मनीन्दुवन्दनं दिगं यमिददिक विन्दुदं महाभकावदनिवावपुलिमास
 अकयं रुज ॥ ७ ॥ गमनरुमिनित्यरुमिन्दुविन्दुयसंवनं यतकृतयुतनीयसत्यिगायस
 विगं मूनकयागिनीकपालजालरुवतं ध्वरं रुज ॥ ८ ॥ पूवयवंतुवाकदलुखंरुखंरुकाव
 कं महाविगमुगुलरुसुतेवितीयदावकं मृगाविगमगायतमयूदकमोदरुं रुज ॥
 ९ ॥ समसुखनवासनासवासनारिदायकं वाथरुवाजिपत्तवाजिपत्तवाजिदायकं य
 लाकाशदरुयुयुजिगं दुर्गकं रुज रुजंगरुलरागरुवाकवध्वरं ॥ १० ॥ निधीरुव
 वाककसागं समादं ॥

१ वसुया ॥ ३ वसुकायसकोषयं त्यक् एदिविनिमिर्गं गृह्णनांदव
 कमलं कामलं यटसंयुर्गं ॥ ॥ वन्दन ॥ ३ दीपाकवसमत्यनं
 दवानीपत्रमपियं वाजानां सर्वदृक्कानां वन्दनं पुनिगृह्णनीं ॥
 सगन्ध ॥ ॥ कयूनागुत्रुकसुवी नानागन्धदिसंयुर्गं गृह्णनीं
 कमलाथयं गथादवयुसिदभं ॥ ॥ यक्षापवीनं ॥ ॥ ३ वं
 चगीरुसंपूर्णं उपविर्गं सुगन्धिनीं गृह्णनींदव नत्सुर्गं मरु
 दववत्रपुद ॥ ॥

॥ माला पूष्य ॥ ॐ माल्यादिनि सुगन्धानि नाना जाति सुगन्धानि ॥
नयादलं हि पूजार्थं गृह्य गां पत्रमथैव ॥ ॥ ॐ यद्यस्य
सिंहाङ्गं लक्ष्मी वास गृहात्तु मी गृह्य गां तु जगत्पीता महापद्म
प्रसिद्धम् ॥ ॥ दमन ॥ ॐ कन्दर्प रुक्मसिंहाङ्गं सर्वदेवप्रियं करी
गृह्य गां भद्रा देव दमनं नववत्सरं ॥ ॥ धूप ॥ नाना गन्ध
सुसंयुक्तं धूपार्थं समस्त नारायण आद्या लं सर्वदेवा वशि ॥ धूपा

यं प्रणिगृह्य गां ॥ ॥ दीप ॥ ॐ मातुलु मधुला खलु चन्द्र विम्बा
ग्नि भोजसां निधन देव दीपार्थं निर्मलं नव रुक्मिकं ॥ ॥
ॐ नैवेद्यं गृह्य गां देव रुक्मि भवत्सला कन ॥ ॐ श्री नमो भवत्सला हि
पवित्रं नैवेद्यं गानि ॥





१ नमः स्वयं वर्युजं ॥ नै विष्णुद व का स ना य न म ॥ १ ॥ नै लं गु कान नै द र्त्र व रु द्वा
 दं गि ला य नं । गि लू लं वा क मा ला ॥ वि न्द या ग क र द र्यं ॥ नै ज य म् म हा सि द्ध र व य रा य
 न म ॥ २ ॥ सुं ख र्त्र व ना य न म ॥ ३ ॥ सौ सौ सुं सुं विष्णु द सा कि नी पी ख ॥ श्री ग न न द द व द
 या य ३ ॥ सुं ख य न मू र्त्त य व लीं गृ द्वा २ ॥ सुं सा हा ॥ जा य ॥ सुं सा हा ॥ सुं र्त्त ॥ सि द्धि द र व य रं
 थ म् स र्व स म्प द्दि दाय कं । मा क ल श्री य दा ना रं गि व वृ य न म मा म्दं ॥ दौ स र्व स र्त्त क ि
 नी मू द्वा द र्त्त य दिति ॥ ० ॥ न ता रु व र य उ ज नं ॥ नै अ ना रु त व का य न म ॥ यी त द र्त्त व
 रा हा र्त्त व रु द्वा दं गि ला य नं । य रु कं वा क मा ला ॥ वि ज नं वि न्द या ग कं ॥ नै लं म् म
 हा रु व रा य न म ॥ ३ ॥ सुं म र्त्त व ना य न म ॥ कौ कौ कं सुं का कि नी अ ना रु त ॥

का य न म ॥ सुं रु व र मू र्त्त व लीं गृ द्वा २ सा हा ॥ जा य ॥ सुं सा हा ॥ सु ति ॥ रु व रं
 रु व रं स र्व य वि र्त्त द र्त्त म ध रं । स र्व स र्त्त व र्त्त व र्त्त गि व वृ य न म मा म्दं ॥ दी मिति
 दा व नी मू द्वा द र्त्त य दिति ॥ २ ॥ ज ल व र य उ ज नं ॥ नै ३ म लि यू व क व का य न म ॥ क
 द्द न्द हि म र्त्त का र्त्त मी न व रु क गि ला य नं । ध र्त्त रु स म लि यू कं र्त्त व या य धृ ता मृ तं ॥
 नै लं म् म हा ज ल व रा य न म ॥ ३ ॥ नै ज य म् म लि यू व क ल कि नी य म हा यू री सि नी
 सा ॥ न न्द द व र्त्त य ॥ सुं ज ल व रा य व लीं गृ द्वा २ ॥ जा य ॥ सुं सा हा ॥ सुं र्त्त ॥ स म्प द्दि रु व रं
 जा र्त्त य वि र्त्त य ना र्त्त नै । सि द्धि सो रा ग्ध र्त्त रु दं वि न्द वृ य न म मा म्दं ॥ की व र्त्त नी
 मू द्वा द र्त्त य दिति ॥ ३ ॥ अ थ रु व र य उ ज नं ॥ नै ३ सा धि र्त्त न व का य न म ॥ व क व

महासाहं वरुचकं जिलावनं । खड्गखट्वा न हस्तं व मकायागधृतामृता । नैजमाम
 हासायनमम ॥ १ ॥ नैजमाम साधिवानवाकिनीयमनगदी मभनददवधीयं वृष्टु
 ॥ नैजमहासायनमवलिगृह्ण ॥ २ ॥ साहा ॥ जाय ॥ नैजसाहा ॥ मुति ॥ ३ ॥ जायूकादिगंयं के
 मिनीप्रधादियुति । जादिसद्विनिर्कार्क कलुलीगंनमामहं ॥ नैजवलिनीमदी ॥ ४ ॥
 अथसर्ववदुयुजनं ॥ नैजममोक्षत्रकायनमम ॥ ५ ॥ मवलेयनीकादी वरुचकं जिला
 वनं । डत्यलयदहस्तं व महायागधृतेकत्र ॥ नैजमाम सर्ववदुमूरुयनमम ॥ नैजमाम
 मामात्राकिनीमनयूनीमिगानददवधीयाद वृष्टु कां ॥ नैजमवलेयवलिगृ
 ह्ण ॥ २ ॥ साहा ॥ जाय ॥ नैजसाहा ॥ मुति ॥ वरुचकं यं व कं वदं वरुचकं यं व कं वरुच

सर्वदीयावलाकवु कलुलीगंनमामहं ॥ ५ ॥ डमादिनीमदीदर्ययदिनि ॥ ५ ॥
 नैजमामात्रकायनमम ॥ ६ ॥ नैजमामात्रकायनमम ॥ ६ ॥ नैजमामात्रकायनमम ॥ ६ ॥
 उवादिजिलावनं । खड्ग हं वरुचकं वृष्टुयागधृतेकत्र ॥ अलिमासावर्तनिर्यं वि
 धयसावतागनि । आकायकस्मितीदवृ कालीकालविनागनं ॥ ७ ॥ नैजमामात्रकायनमम ॥ ७ ॥
 हाहोदू दू आकाहाकिनीययनीधीअखलीगंनददवधीयादकां ॥ कालिकालि
 महाका वृष्टु लिमासावर्तनिर्यं विनागनं ॥ ८ ॥ नैजमामात्रकायनमम ॥ ८ ॥
 गवृष्टु वृष्टुयागधृतेकत्र ॥ ९ ॥ नैजमामात्रकायनमम ॥ ९ ॥ नैजमामात्रकायनमम ॥ ९ ॥
 कालिकदवि सर्वनिर्वाणदयिक आधिभकरुयधार्ज अहिमृष्टु रुया

यद् ॥ कौमहाकू ॥ मदादर्थयदिति ॥ ७ ॥ अथ अलुजयुजनं ॥ निर्वजनकमलास
 नायनमः ॥ वंदकादिमहातजा ॥ निभगावचयुर्जुजा ॥ युर्लुयागुभृतादवि वत्रकम
 हा रुया ॥ निजयथमकूटमन्त्राय ॥ अलुजयवमरुथनमः ॥ सौ आत्मतलायकि
 यागकियरायनिर्वानवदुकादवीधीयादका ॥ सुं वलिगृह ॥ २ साहा ॥ जाय ॥
 धुं साहा ॥ सुति ॥ अलुजं सामिकादवि सर्वसुनकाजिनी ॥ आवाग्यपरिष्ट
 दातिर्य सर्वसोहाग्यदायिनी ॥ खवत्रीमदोदनीयदिति ॥ १ ॥ तताद्ववा
 कयुजनं ॥ गलात्मकमलासनायनमः ॥ सूर्यकादियतीकादीं सर्वान् यतिः ॥
 रुतं ॥ विदयातसूत्रायुर्लु डल्लयवदरुया ॥ कीद्वितीयमन्त्राय विष्णु

किं सात्विकीश्वरजमूरुथनमः ॥ ३ ॥ नमो श्वरजमूरुथवलिगृह ॥ २ साहा ॥
 जाय ॥ की साहा ॥ सुति ॥ सात्विकीश्वरजा ॥ दवी गायस्यपरिदायिनी ॥ सर्ववि
 ध्रविनाशाय विष्णुकनमासुत ॥ वीज मदा ॥ ८ ॥ ततः कं वयुजनं ॥ वय
 मलुतासनायनमः ॥ कालाग्निरजवसदीर्घं वयुवाकं सितावनं ॥ कार्यं वि
 द्यायात्रिजार्त गार्तगाव ॥ अक्षविनी ॥ नानातं का वरुवा ॥ नृदगा कि नमाः
 सुत ॥ सोऽरुतीयमन्त्राय नृदगा कि नामसी कनायुजमूरुथनमः ॥ ३ ॥ य
 ललात्मक वलिगृह ॥ २ साहा ॥ जाय ॥ सुति ॥ नामसीयाकवर्ष ॥ सर्वदाय ॥ वि
 नाशनी ॥ सर्व ॥ कि कवीदवि यसादयवमोरुव ॥ यानिमदा ॥ ९ ॥

ॐ ५ अनायासं नमः ॥ अर्चनं ॥ ॐ आत्मनः स्वायम्भुव नमः ॥ ॐ विद्यानः स्वायम्भुव
ॐ शिवनः स्वायम्भुव नमः ॥ ॥ ॐ श्रीमहादेवाय नमः ॥ अनानासु नमः ॥
रिः ॥ कृष्णमद्वयं नमः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ श्रीकृष्णाय नमः ॥
यकाः ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ ॐ श्रीकृष्णाय नमः ॥ ॥ ततोऽपि नमः ॥ ॐ अहो
महोलाका नमः ॥ ॐ श्रीकृष्णाय नमः ॥ यनमः ॥ यनमः ॥ यनमः ॥ ॥ आत्मा

ॐ नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ नमः ॥

विनि गी। विप्रवर्षसहस्रमु च कुरुमीलि नमया॥८॥ यदिति नमस्कृतं
 नास्ययिनिगाजलविन्दवा। गस्माच्च विन्दुगाजातां महा नूदा कवृक
 का॥९॥ नूदा अस्थरु लं वत्स गिषलाकस्यविष्णु गील कंगुदलनान्यु
 र्ध्वं काठिरुवगिस्यर्गना गा॥१०॥ दलकाठिसर्मयु र्ध्वं नथ लरु गेरु लं
 लरु काठिसहस्रानि लरु काठिना गानि च॥ ११॥ ऊकस्य लरु गेरु र्ध्वं ना

नका र्थाविधानं॥ ग। हस्रं वा नसिकं ^{न२} १० च मरुके वापि धानयन॥१२॥
 मयु गे सर्वयाथ रूपा नूदा का धार्या नवा नूदा र्कं ० मागि मयु नापि
 मियमयदि॥१३॥ सावि नूदमवाप्यानि किंयु नममि नूदाद य४ धानध
 वला हीनापि नूदा र्कं यदि धानयन॥१४॥ सर्वयापि निम्नकू ४ सया
 गिव नमं गति॥ ॥ कन्द उवाच॥ एकवर्कं च ४ ४ वगु ४ र्ध्वं वनवच
 ॥७॥ षट्काष्ठ नववर्का दलानुका दलानि च नूदा र्कं दलानवर्कं
 द्विवर्कं

वकुं येव तुयादली ॥ १७ ॥ वतुद (लोमश्वेयकं) वका लुकं तुगं
 कन ॥ १८ ॥ वतुद वका लीदवा दव सुव वव ॥ १९ ॥ तुलावकी
 दलं दव कथय स्वयं धर्म ॥ २० ॥ महादडवाव ॥ २१ ॥ वव
 वग व नवकुं वकु य धरु ली ॥ २२ ॥ वक वकुं गिव ॥ २३ ॥ सा काडु वरु
 ली दद न कल ॥ २४ ॥ दिवकुं दव दवा सु ॥ २५ ॥ नाग य धुव

ये

॥ २६ ॥ गिवकुं जति ल ॥ २७ ॥ सा का ली द ली द द न कल ॥ २८ ॥ वतुदकु
 स्वयं वका यन वरु ली विदो ॥ २९ ॥ वव वकुं स्वयं वदो ॥ ३० ॥ का ला
 गिन मिनाम न ॥ ३१ ॥ जग म्याग मर्न वव जुरु कस्य वरु कल ॥ ३२ ॥ मय
 न सर्वपाथ ली वव वस्य धर्म ॥ ३३ ॥ वव कुं कारिके य सु धान
 यद कि (लकन) ॥ ३४ ॥ व वरु ली दिरि यो य म्मि व न नाग स ॥
 य ॥ ३५ ॥ सय वकुं मरु सन अन का ना म नाग वा ॥ ३६ ॥ सुव ली सय

यायाति३

गाहत्या मृत्वा गद्या गके तत्रै३ अ ववकुमहासन सा का द्वो विनाय
क॥१५॥ मानकृढं गु नाकृढं सर्वकृढं तथेव वाह गाल क नलेन
सस्यवाग्नु कथिय॥१६॥ एवमादो निर्दंति सर्वाणि धानानि ॥ विद्यु
सस्यविनश्यंति त्रैगुणानि यनांगानि ॥१७॥ नववर्कुरु नव॥ सा का दानथदा
मवाकुरि॥ कायि तस्या न्मुकिद समुत्पन्नसमा रुवत् ॥१८॥ दणवकुं सु

देवस सा का देवा जनाद न॥ ए हा धेव विष्णा वाद्या वना नावयु नाक
सा॥१९॥ य नं गा अ विथवा न् ॥ सर्वतिथ्यं निष्कान्ता ॥ वकुं कादण नृणां का
नृणां कादण स्मृता॥२०॥ निखायाधि मयतिर्यं तस्य वृत्त रु स ॥
अथ मधसह सानि वा जययन गानि व ॥ नवकाटि सद्वा नि सम्य
यस्य गह लीला यु माथानि वकुं काद ॥ नृणां ॥२१॥ नृणां कदाद
नवकुं की० द ॥ एव धानयन् ॥ आदित्यं तय गतिर्य द्वा द न नववहि
न रु लै३

